RESEARCH FRONT

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

फिल्म निर्माण के चरण

डॉ. विजय शिंदे
देवगिरी महाविद्यालय, औरंगाबाद - 431005 (महाराष्ट्र).
ब्लॉग - साहित्य और समीक्षा *डॉ. विजय शिंदे*

लेखक के द्वारा लिखी कहानी से परदे पर उतरनेवाली फिल्म तक की प्रक्रिया बहुत लंबी है। यह प्रक्रिया विविध चरणों, आयामों और संस्कारों से अपने मकाम तक पहुंचती है। एक लाईन में बनी फिल्म की कहानी या यूं कहे कि दो-तीन पन्नों में लेखक द्वारा लिखी कहानी को फिल्म में रूपांतरित करना एक प्रकार की खूबसूरत कला है। इस रूपांतर से न केवल लेखक चौकता है बल्कि फिल्म के साथ जुड़ा हर शख्स चौकता है। टूकड़ों-टूकड़ों में बनी फिल्म जब एक साथ जुड़ती है तो एक कहानी का रूप धारण करती है। फिल्मों का इस तरह जुड़ना दर्शकों के दिलों-दिमाग पर राज करता है। लेखक से लिखी कहानी केवल शब्दों के माध्यम से बयान होती है परंतु फिल्म आधुनिक तकनीक के सहारे से ताकतवर और प्रभावी बनती है। "सिनेमा ने परंपरागत कला रूपों के कई पक्षों और उपलब्धियों को आत्मसात कर लिया है – मसलन आधुनिक उपन्यास की तरह यह मनुष्य की भौतिक क्रियाओं को उसके अंतर्मन से जोड़ता है, पेटिंग की तरह संयोजन करता है और छाया तथा प्रकाश की अंतर्क्रियाओं को आंकता है। रंगमंच, साहित्य, चित्रकला, संगीत की सभी सौंदर्यमूलक विशेषताओं और उनकी मौलिकता से सिनेमा आगे निकल गया है। इसका सीधा कारण यह है कि सिनेमा में साहित्य (पटकथा, गीत), चित्रकला (एनीमेटेज कार्टून, बैकड्रॉप्स), चाक्षुष कलाएं और रंगमंच का अनुभव, (अभिनेता, अभिनेत्रियां) और ध्वनिशास्त्र (संवाद, संगीत) आदि शामिल हैं। आधुनिक तकनीक की उपलब्धियों का सीधा लाभ सिनेमा लेता है।" *(संदर्भ विकिपिड़िया)* यहां हमारा उद्देश्य सिनेमा निर्मिति का संक्षिप्त परिचय करवाना है और इस परिचय के दौरान फिल्म निर्माण के चरण और फिल्म निर्माण की प्रक्रिया अत्यंत महत्वपूर्ण है।

फिल्मों का पांच चरणों में निर्माण होता है। विकास, पूर्व निर्माण, निर्माण, उत्तर उत्पादन (पोस्ट प्रोड़क्शन), वितरण व प्रदर्शनी इन पांच चरणों के तहत फिल्में बनती हैं। इन पांच चरणों का विश्लेषण निम्नानुसार किया जा सकता है -

1. विकास

सिनेमा के निर्माता निर्देशक के लिए अच्छी कहानी की तलाश होती है। घिसे-पिटे विषय और ढांचे के तहत बनी फिल्में दर्शकों को सिनेमाघरों तक खिंचने में नाकाम होती है। अतः बहुत बड़ी लागत में बनी फिल्म आर्थिक नुकसान करवाती है और साथ ही निर्माता निर्देशकों के साथ फिल्म से जुड़े हर व्यक्ति के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करती है। अतः फिल्म निर्माणकर्ता कहानी का चुनाव बिना किसी जोखिम से करता है। उसके लिए वह अपने आसपास की दुनिया को खुली आंखों से देखता है, पढ़ता है, परखता है; हर पल वह चौकन्ना रहता है। उसे जिस कहानी में विषय, विचार, सूत्र अच्छा लगता है तथा सौ फिसदी सफलता का भरौसा होता है, उसे ही फिल्म निर्माण हेतु चुनता है। फिल्में दर्शकों के साथ जुड़ती है, उन्हीं के सपनों को साकार करती है। अर्थात् उनके सपनों से जुड़ी फिल्में हमेशा बनाने का प्रयास निर्माताओं का रहता है। हिंदी सिनेमा की समीक्षक गीताश्री लिखती है

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

कि "सिनेमा हमारे सपनों, आकांक्षाओं को सहलाता है। जिनके सपनें पूरे नहीं होते, उनके लिए सिनेमा किसी आश्वासन की तरह होता है। शायद महाआंनद तक जानेवाली राह है। अपने भीतर की नायकत्व की तलाश। हम हमेशा खुद को खोजते हुए किरदारों में प्रवेश कर जाते हैं। आकांक्षाओं को टिकने के लिए किसी जगह की तलाश रहती है जहां वे राहत पा सकें, थोड़ी देर के लिए ही सही। सिनेमा यही एक जगह है। अंधेरे में उजाले की चलती-फिरती फंतासी के लिए भी।" *(हिंदी सिनेमा दुनिया से अलग दुनिया, पृ. 5)* फिल्म से हर कोई लाभ कमाना चाहता है, अतः उसे, उसकी कहानी, पटकथा, संवाद, अभिनय, संगीत आदि बातों को लाभ की कसौटी पर ही आंका जाता है। कहानी के चुनाव के बाद उस पर फिल्म स्वरूप के हिसाब से संस्कार होते हैं। छोटी कहानी से या एक परिच्छेद से बीस-बाईस पन्नों का कच्चा ड्राफ्ट बनाया जाता है। यहीं कच्चा ड्राफ्ट सबको फिल्म की सफलता से आश्वस्त करता है। अभिनेताओ से लेकर वितरक और फिल्म फायनेंसर तक सभी इसी ड्राफ्ट को पढ़कर उसकी सफलता को आंकते हैं। सबकी मान्यता और सहयोग की अनुमति मिलने के बाद असल में फिल्म बनाने को लेकर कार्य शुरू होता है।

प्राथमिक प्रक्रिया पूर्ण होने और वितरक और फायनेंसरों की अनुमति के बाद निर्माता निर्देशक आश्वस्त होते हैं और कहानी को परदे तक पहुंचाने के लिए कदम उठाते हैं। "पटकथा लेखक कई महीनों से अधिक का समय लेकर पटकथा लिखता है। पटकथा लेखक नाटकीय रूपांतर, स्पष्टता, संरचना, पात्र, संवाद और समग्र शैली को सुधारने के लिए इसे कई बार फिर से लिख सकता है। हालांकि, निर्माता अक्सर पिछले चरणों को छोड़ देते हैं और प्रस्तुत पटकथा का विकास करते हैं जिसे निवेशक, स्टूड़ियो और अन्य इच्छुक पार्टियां एक प्रक्रिया द्वारा आंकती हैं जिसे पटकथा कवरेज कहा जाता है। फिल्म वितरक को शुरूआती दौर में ही संभावित बाजार और फिल्म की संभावित वित्तीय सफलता की समीक्षा के लिए संपर्क किया जा सकता है। हॉलीवुड़ वितरक कठोर व्यापारिक दृष्टिकोण को अपनाते हैं और फिल्म विधा, लक्ष्य श्रोता, समान फिल्मों की ऐतिहासिक सफलता, अभिनेता जो फिल्म में आ सकते हैं और संभावित निर्देशकों जैसे तत्त्वों पर विचार करते हैं।" *(संदर्भ विकिपिड़िया)* फिल्म रिलिज होने के बाद कितनी कमाई करेगी इसके अंदाज फिल्म के कच्चे ड्राफ्ट से पहले लगाए जाते हैं। इस ड्राफ्ट को पढ़कर रुचि रखनेवाले संभावित निवेशक इस फिल्म को आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं। स्टूड़ियो, लोकेशन, फिल्म कौंसिल, निवेशक ही नहीं तो फिल्म रिलिज होने के बाद कौनसे सिनेमाघरों में इसे चलाया जाएगा आदि बातों को लेकर काम किया जाता है जिसका समावेश फिल्म निर्माण के विकास चरण में होता है।

2. पूर्व निर्माण

फिल्म निर्माण में विकास का चरण जब पूरा होता है तब निर्मिति के लिए हरी झंड़ी मिल जाती है और निर्माता दूसरे चरण पूर्व निर्माण की तैयारी में लग जाते हैं। फिल्म को बनाना शुरू करने से पहले की पूर्व तैयारी के नाते पूर्व निर्माण को देखा जाता है। पूर्व निर्माण के तहत फिल्म बनाने के हर पहलू पर सूक्ष्मता से विचार किया जाता है। पूर्व निर्माण के तहत किए गए चुनाव और नियुक्तियां फिल्म निर्माण की सफलता हेतु अत्यंत आवश्यक होती है। यह चरण फिल्मों के निर्माण के लिए नींव होता है। सबसे पहले निर्माण कंपनी और उसका कार्यालय बनाकर इस कार्य का आरंभ होता है। पूर्व निर्माण के तहत आनेवाली सीढ़ियां और महत्त्वपूर्ण बातें निम्नानुसार है -

- निर्माण कंपनी और उसका कार्यालय बनाना।

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

- निर्माण को चित्रकारों और कॉन्सेप्ट आर्टिस्टों की सहायता से चित्र योजित और दृश्यांकित करना।
- प्रोड़क्शन बजट तैयार करना।
- दुर्घटना से सुरक्षा हेतु बीमा करवाना।
- चालक दल का आकार और प्रकार निश्चित करना।
- निर्देशक को फिल्म की कहानी, अभिनय और रचनात्मक निर्णय की मुख्य जिम्मेदार देना।
- सहायक निर्देशकों (एड़ी) की नियुक्तियां करना। सहायक निर्देशक अन्य कार्यों के बीच शूटिंग शेड्यूल और निर्माण के प्रचालन तंत्र का प्रबंधन करता है। कई विभागों में अलग अलग जिम्मेदारी के तहत अनेक एड़ी रहते हैं।
- कास्टिंग निर्देशक पटकथा में भूमिका निभानेवाले कलाकारों की खोज करता है। इसके लिए अभिनेता के ऑड़िशन की आवश्यकता होती है।
- लोकेशन प्रबंधक स्थान का पता लगाता है और फिल्म लोकेशन का प्रबंधन करता है। इससे जुड़े बुकिंग और इजाजतों की सारी प्रक्रियाएं इसे करनी पड़ती है।
- निर्माण प्रबंधक निर्माण कार्यक्रम और निर्माण बजट का प्रबंधन करता है। वे निर्माण कार्यालय की ओर से स्टूड़ियो के अधिकारियों और फिल्म के निवेशकों को सूचित करते हैं।
- छायांकन निर्देशक (DOP) पूरी फिल्म के छायांकन का पर्यवेक्षण करता है।
- ऑड़ियोग्राफर फिल्म के ऑड़ियोग्राफी का पर्यवेक्षण करता है, इसे ध्वनि डिजाइनर या ध्वनि संपादन का पर्यवेक्षण करने वाले के रूप में भी जाना जाता है।
- ध्वनि-मिश्रक फिल्म निर्माण अवस्था के दौरान ध्वनि विभाग के प्रमुख होते हैं। वे सेट पर के संवाद, प्रस्तुति और ध्वनि प्रभाव के मोनो एवं परिवेश के अनुसार ध्वनि की रिकार्डिंग और मिक्सिंग स्टेरिओ में करते हैं।
- ध्वनि डिजाइनर पर्यवेक्षण करनेवाले ध्वनि संपादक के साथ कार्य करते हुए, फिल्म की श्रव्य अवधारणा का निर्माण करता है. कुछ प्रोड़क्शनों में साउंड़ डिजाइनर ऑड़ियोग्राफी निर्देशक की भूमिका निभाते हैं।
- संगीतकार फिल्म के लिए नया संगीत बनाता है।
- प्रोड़क्शन डिजाइनर कला निर्देशक के साथ कार्य करते हुए फिल्म की दृश्य अवधारणा का निर्माण करता है।
- कला निर्देशक कला विभाग का प्रबंधन करता है, जो प्रोड़क्शन सेटों का निर्माण करता है।
- कॉस्ट्यूम डिजाइनर कलाकारों और अन्य विभागों के साथ मिलकर फिल्म के पात्रों के लिए कपड़े बनाता है।
- श्रृंगार और हेअर डिजाइनर कॉस्ट्यूम डिजाइनर के साथ मिलकर पात्रों का एक निश्चित लुक तैयार करता है।
- चित्र योजना कलाकार निर्देशक की मदद के लिए दृश्य चित्रों का निर्माण करते हैं और प्रोड़क्शन डिजाइनर निर्माण दल तक उनके विचारों को पहुंचाता है।
- नृत्य निर्देशक जुंबिश और नृत्य का निर्माण और समन्वय करता है।
- फाईट कोरियोग्राफर की भी नियुक्ति की जाती है। *(संदर्भ विकिपिड़िया)*

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

3. निर्माण

फिल्म निर्माण के पांचों चरणों में सबसे महत्त्वपूर्ण चरण के नाते निर्माण को देखा जाता है। सारी प्रक्रियाओं, चुनाव और लोकेशन सेट होने के बाद सीधे निर्माण की ओर बढ़ा जाता है। निर्माण में सीधे फिल्म के लिए वीड़ियो शूट करने का कार्य शुरू होता है। वीड़ियो शुटिंग के दौरान आवश्यक चालक दल की भर्ती की जाती है। जिसमें संपत्ति मालिक, पटकथा पर्यवेक्षक, सहायक निर्देशक, चित्र फोटोग्राफर, चित्र संपादक और ध्वनि संपादक आदि प्रमुख व्यक्तियों का चुनाव और नियुक्तियां महत्त्वपूर्ण है। एक दृश्य के शुटिंग की प्रक्रिया को देखकर निर्माण प्रक्रिया कैसी होती है इसका अंदाजा लगा सकते हैं। इसलिए यहां पर एक दृश्य के शूटिंग का क्रम दे रहे हैं।

- एक विशिष्ट दिन की शूटिंग चालक दलों के निर्धारित सेट (लोकेशन) पर बुलाए गए समय पर पहुंचने के साथ ही शुरू होती है। अभिनेताओं के आमतौर पर अपने अलग कॉल समय होते हैं। चूंकि सेट निर्माण, ड्रेसिंग और लाइटिंग में घंटों या एक दिन भी लग सकते हैं, इसलिए प्राय: उन्हें पहले ही तैयार कर लिया जाता है।
- ग्रीप, बिजली और उत्पादन डिजाइन चालक दल आमतौर पर कॅमरा और ध्वनि विभागों से एक कदम आगे रहते हैं। दक्षता की खातिर, जबकि एक दृश्य फिल्माया जा रहा होता है, वे पहले से ही अगले की तैयारी कर रहे होते हैं।
- जब चालक दल अपने उपकरण तैयार करते हैं, अभिनेता अपनी वेशभूषा के लिए वस्त्रागार, बाल और श्रृंगार विभागों के चक्कर लगा रहे होते हैं। अभिनेता निर्देशक के साथ बंध कर पटकथा का अभ्यास करते हैं और कैमरा और ध्वनि चालक दल भी उनके साथ अभ्यास करते हैं और अंतिम टेक का निर्माण करते हैं। अंत में, एक्शन को निर्देशक की इच्छाओं के अनुरूप कई टेकों में शूट किया जाता है।
- सहायक निदेशक सभी को यह सूचित करने के लिए कि टेक रिर्काड़ होने वाला है **'पिक्चर इज अप'** कह कर बुलाता है। और उसके बाद **'क्वायट एव्रीवन'** कहता है। एक बार जब हर कोई शूट करने के लिए तैयार हो जाता है, वह **'रोल राउंड़'** कह कर पुकारता है। यदि टेक में ध्वनि शामिल रहता है तो प्रोड़क्शन साउंड़ मिक्सर अपने यंत्रों को चला देता है, टेक की सूचनाओं के एक मौखिक स्लैट को रिकॉर्ड करता है और घोषणा करता है **'साउंड़ स्पीड़'** जब वे तैयार हो जाते हैं। इसके बाद सहायक निर्देशक कहता है **'रोल कॅमरा'** और जब कॅमरा एक बार रिकॉर्डिंग शुरू कर देता है तो कॅमरा संचालक जबाब देता है **'स्पीड़'**। क्लॅपर, जो पहले से ही क्लॅपबोर्ड के साथ कॅमरे के सामने होता है, कहता है **'मार्कर!'** और झटके से बंद करता है। यदि टेक में अतिरिक्त या पृष्ठभूमि एक्शन शामिल रहता है तो एड़ी उसको **'एक्शन बॅकग्राउंड़!'** करता है और सबसे अंत में निर्देशक होता है जो अभिनेताओं को **'एक्शन!'** कहता है।
- निर्देशक जब **'कट!'** कहता है तब एक टेक समाप्त हो जाता है और कॅमरा और ध्वनि रिकॉर्डिंग रोक देते हैं। पटकथा पर्यवेक्षक किसी भी निरंतरता के मुद्दों को नोट करता है और साउंड़ और कॅमरा की टीमें अपनी-अपनी शीट पर तकनीकी टिप्पणियां दर्ज करती हैं। अगर निर्देशक यह फैसला करता है कि अतिरिक्त टेकों की जरूरत है तो पूरी प्रक्रिया फिर से दुहराई जाती है। जब वह संतुष्ट हो जाता है, चालक दल अगले कॅमरा कोण या 'सेटअप' की ओर बढ़ते हैं, जब तक कि पूरा दृश्य 'कवर' नहीं हो जाता। जब एक दृश्य के लिए शूटिंग समाप्त हो जाती है तो

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

सहायक निर्देशक **'रॅप'** या **'मूविंग ऑन'** की घोषणा करता है और चालक दल उस दृश्य के सेट को विघटित कर देते हैं।

- दिन के अंत में निर्देशक अगले दिन की शूटिंग शेड्यूल की मंजूरी देता है और एक दैनिक प्रगति रिपोर्ट निर्माण कार्यालय को भेज दी जाती है। इसमें निरंतरता, ध्वनि और कॅमरा टीमों की रिपोर्ट शीट शामिल रहती हैं। यह बताने के लिए कि अगले दिन की शूटिंग कब और कहां होगी, कॉल शीट कलाकारों और चालक दलों में वितरित की जाती है। निर्देशक, निर्माता, अन्य विभाग के प्रमुख और कभी कभी कलाकार भी उस दिन या बीते हुए दिन के फूटेज जिसे डैलीज कहा जाता है, को देखने के लिए और अपने कार्य की समीक्षा के लिए इकट्ठे हो सकते हैं।*(संदर्भ विकिपिड़िया)*

फिल्म निर्माण के दौरान यह एक दिन और एक दृश्य की प्रक्रिया है। इस प्रकार से फिल्म के सभी दृश्यों को फिल्माया जाता है। समीक्षा करते वक्त अगर किसी दृश्य में खराबी या कमी लग रही है तो उसे उसी दिन दुबारा फिल्माया जाता है। पूरी फिल्म के निर्माण कार्य के दौरान सारे कलाकार और सहयोगी सदस्यों में नजदीकियां और आत्मीयतापूर्ण माहौल रहता है, अतः निर्माण कार्य के समाप्ति की घोषणा रॅप पार्टी के आयोजन के साथ होती है और इसमें धन्यवादज्ञापन भी होता है।

4. उत्तर उत्पादन (पोस्ट प्रोड़क्शन)

आऊटडोर शूटिंग और इनडोर शूटिंग के बाद या यूं कहे कि निर्माण प्रक्रिया के बाद बनी कच्ची बहुत लंबी फिल्म पोस्ट प्रोड़क्शन के लिए तथा विविध संस्कार और क्रमबद्धता के लिए संपादकीय टेबल पर पहुंच जाती है। आजकल तकनीक का इतना अधिक विकास हो गया है कि इसके सहायता से फिल्मों में अतिरिक्त प्रभाव और स्पष्टता आ जाती है। शूटिंग के दौरान जुड़ चुके अतिरिक्त दृश्यों और अनावश्यक बातों को यहां पर कटवाया जाता है और फिल्म को एक स्पष्ट, निरंतर कहानी के स्वरूप मे ढाला जाता है। पोस्ट प्रोड़क्शन कार्य निम्न तरिके से होता है -

- **वन-लाइट वर्कप्रिंट (पोजिटिव) -** फिल्म के कार्य में, मूल कॅमरा फिल्म को विकसित और एक यांत्रिक एड़िटिंग मशीन से संपादन करने के लिए एक वन-लाइट वर्कप्रिंट (पोजिटिव) में कॉपी की जाती है। पिक्चर फ्रेम की स्थिति को बताने के लिए फिल्म में एक एज़ कोड़ को रिकॉर्ड किया जाता है।
- **कंप्यूटर एड़िटिंग -** वीड़िओ वर्कफ़्लो में, मूल कॅमरा निगेटिव को विकसित किया जाता है और कंप्यूटर एड़िटिंग सॉफ्टवेयर से संपादन करने के लिए उसे टेलिसाइन किया जाता है। पिक्चर फ्रेम की स्थिति को लोकेट करने के लिए वीड़िओ में एक टाइमकोड़ रिकॉर्ड किया जाता है। इस प्रक्रिया के दौरान निर्माण ध्वनि को भी वीड़ियो पिक्चर फ्रेम के साथ-साथ बढ़ाया जाता है।
- **रफ कट -** फिल्म संपादक का पहला काम व्यक्तिगत 'टेक्स' (शॉट्स) पर आधारित सिक्वेन्स (दृश्य) से लिए गए रफ कट को निर्मित करना होता है। रफ कट का उद्देश्य सबसे अच्छे शॉट का चुनाव करना और उसे क्रम में सजाना होता है। निर्देशक आमतौर पर यह सुनिश्चित करने के लिए की अनुरूप शॉट्स का चयन किया जाए, संपादक के साथ काम करता है। अगला कदम सभी दृश्यों के द्वारा एक बढ़िया कट निर्मित करना होता है ताकि वह एक अखंड़ कहानी के साथ सहज रूप से प्रवाहित हो सके।

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

- **ट्रिमिंग -** कुछ सेकेंड्रों में दृश्यों को छांटने की एक प्रक्रिया, या फ्रेम भी, इसी चरण के दौरान होता है।
- **लॉक्ड -** फाइन कट के चुन लिए जाने के बाद और निर्देशक और निर्माता द्वारा अनुमोदित होने के बाद फिल्म को 'ताला बंद' (लॉक्ड) कर दिया जाता है, जिसका मतलब यह होता है कि अब उसमें कोई परिवर्तन नहीं किया जाएगा।
- **संपादन सूचियां -**, संपादक स्वत: या हाथ से निगेटिव कट सूची (एज़ कोड़ का इस्तेमाल करते हुए) या एक संपादन निर्णय सूची (टाइमकोड़ का इस्तेमाल करते हुए) बनाता है। ये संपादन सूचियां फाइन कट में प्रत्येक दृश्य के पिक्चर फ्रेम के स्त्रोत की पहचान करती हैं।
- **साउंड़ ट्रॅक -** एक बार जब पिक्चर लॉक कर दी जाती है तो उसे साउंड़ ट्रॅक बनाने के लिए ध्वनि-विभाग के पोस्ट प्रोड़क्शन ध्वनि पर्यवेक्षण संपादक के हाथों में सौंप दिया जाता है। आवाज रिकॉर्डिंग को सिंक्रनाइज़ किया जाता है और रि-रिकॉर्डिंग मिक्सर के द्वारा अंतिम ध्वनि मिश्रण तैयार किया जाता है। ध्वनि मिश्रण में संवाद, ध्वनि प्रभाव, एटमोस, एड़ीआर, वाल्ला, फोलेज और संगीत शामिल हैं।
- **ध्वनि ट्रैक और पिक्चर को जोड़ना -** ध्वनि ट्रैक और पिक्चर को एक साथ युक्त किया जाता है और यह फिल्म में निम्न गुणवत्ता आंसर प्रिंट का परिणाम है। रिकॉर्डिंग माध्यम पर निर्भर करते हुए उच्च गुणवत्ता रिलीज़ प्रिंट का निर्माण करने के लिए दो संभावित वर्कफ्लो तैयार होते हैं।
- **कलर मास्टर पोजिटिव -** फिल्म वर्कफ्लो में, फिल्म-आधारित आंसर प्रिंट की व्याख्या करने वाली कट सूची का प्रयोग मूल कलर निगेटिव (OCN) को काटने के लिए प्रयुक्त की जाती है और कलर मास्टर पोजिटिव या इंटरपोजिटिव प्रिंट नामक एक कलर टाइम्ड कॉपी निर्मित की जाती है। बाद के सभी चरणों के लिए यह प्रभावी रूप से मास्टर प्रतिलिपि बन जाती है।
- **कलर डुप्लिकेट निगेटिव -** अगले कदम में कलर डुप्लिकेट निगेटिव या इंटरनिगेटिव नामक एक वन-लाइट कॉपी तैयार की जाती है। इसी कॉपी से अंतिम रूप से सिनेमा घरों में रिलीज करने के लिए बहुत सारी कॉपियां तैयार की जाती हैं। इंटरनिगेटिव से कॉपी करना सीधे-सीधे इंटरपोजिटीव से कॉपी करने की अपेक्षा ज्यादा आसान होता है क्योंकि यह वन-लाइट प्रक्रिया है और यह इंटरपोजिटिव प्रिंट के खुरदरेपन को भी कम करता है। वीड़ियो वर्कफ्लो में, वीड़िओ आधारित आंसर प्रिंट की व्याख्या करने वाली संपादन निर्णय सूची का उपयोग मूल कलर टेप)OCT) का संपादन करने और एक उच्च गुणवत्ता वाले कलर मास्टर टेप तैयार करने के लिए किया जाता है। बाद के सभी चरणों के लिए यह प्रभावी रूप से मास्टर कॉपी बन जाती है। अगले कदम में फिल्म रिकॉर्डर का उपयोग कलर मास्टर टेप को पढ़ने और और सिनेमाघरों में रिलीज करनेवाले प्रिंट निर्मित करने हेतु प्रत्येक वीड़ियो फ्रेम को सीधे-सीधे फिल्म में कॉपी करने के लिए किया जाता है।
- **पूर्वावलोकन -** अंत में सामान्य रूप से लक्षित दर्शकों के द्वारा फिल्म का पूर्वावलोकन किया जाता है और प्रतिक्रियाओं के आधार पर आगे की शूटिंग और संपादन किया जा सकता है। फिल्म को एक साथ रखने के दो तरीके हो सकते हैं। एक रास्ता रेखीय संपादन और अन्य गैर रेखीय संपादन का है। रेखीय संपादन फिल्म का उपयोग इस तरह से करता है जैसे यह एक सतत फिल्म है। फिल्म के सभी भाग पहले से ही क्रम में होते हैं और उन्हें इधर-उधर ले

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

जाने की या करने की जरूरत नहीं होती। इसके विपरीत, गैर रेखीय संपादन में टेप किए गए क्रम को ध्यान में नहीं रखा जाता है। दृश्य चारों ओर घुमाए जा सकते हैं या हटा भी दिए जाते हैं। *(संदर्भ विकिपिड़िया)*

5. वितरण और प्रदर्शनी

वितरण और प्रदर्शनी फिल्म निर्माण का अंतिम चरण है। फिल्मों को विकास चरण के तहत बिक्री, वितरण और प्रदर्शनी के तहत विविध सहयोगी कंपनियों, वितरण कंपनियों के साथ अनुबंधित किया जाता है। इस चरण में इन कंपनियों का कार्य शुरू होता है। यह कंपनियां सिनेमाघरों में फिल्म को रिलीज कर देते हैं। अनुबंधों के अधीन रहकर फिल्मों को डीवीड़ी, वीसीड़ी, वीएचएस, ब्लू-रे में प्रदर्शित किया जाता है। नई तकनीको के तहत प्रोवाइड़र से सीधे-सीधे फिल्मों को डाउनलोड़ भी किया जा सकता है। फिल्म को रिलिज करने से पहले उसके व्यापक प्रचार और प्रसार का कार्य भी होता है। यह करना अत्यंत जरूरी होता है कारण इस पर फिल्म की सफलता और असफलता निर्भर होती है। इसीसे आर्थिक लाभ के रास्ते भी खुल जाते हैं। अतः न केवल वितरण कंपनियां बल्कि फिल्म से जुड़ा हर जिम्मेदार शख्स फिल्म के प्रचार-प्रसार में योगदान देता है। फिल्म के निर्माण के आरंभ के दौरान ही फिल्म के प्रचार-प्रसार और विज्ञापन के अनुबंधों को अंजाम दिया जाता है। आजकल फिल्म रिलिज होने से पहले और बाद में फिल्मी कलाकार मीड़िया में जो इंटरव्ह्यु देते हैं या प्रमोशन के लिए कार्य करते हैं यह आरंभिक अनुबंधों का ही नतीजा माना जा सकता है। "प्रेस किट, पोस्टर और अन्य विज्ञापन सामग्री प्रकाशित की जाती है और फिल्म का प्रचार किया जाता है। फिल्म कंपनियां आमतौर पर फिल्म को एक लॉच पार्टी, प्रेस विज्ञप्ति, प्रेस के साथ साक्षात्कार, प्रेस समीक्षा स्क्रिनिंग और फिल्मोत्सव स्क्रिनिंग के साथ रिलीज करती हैं। अधिकांश फिल्मों की एक वेबसाइट होती है। फिल्म चयनित सिनेमाघरों में चलती है और डीवीड़ी आमतौर पर कुछ महीनों के बाद जारी की जाती है। फिल्म और डीवीड़ी के वितरण का अधिकार भी आम तौर पर दुनिया भर में वितरण के लिए बेचा जाता है। वितरक और प्रोड़क्शन कंपनी लाभ को आपस में बांटती है।" *(संदर्भ विकिपिड़िया)*

सारांश

आम जनता पर दृक और श्रव्य माध्यम का गहरा प्रभाव है। दृक और श्रव्य माध्यम के नाते आम जनता आम न रहकर दर्शक बन जाती है। दुनिया में हर इंसान एक दर्शक है और उसने एक बार फिल्म का मजा चखा कि उसका मन उसे बार-बार चखने का करता है। फिल्में इंसान की जिंदगी में वह हरियाली है जिससे उसका मन, अंतरआत्मा और दिमाग तरोताजा होता है। उसके मन, अंतरआत्मा और दिमाग में बनते सपनें साकार होने की जगह सिनेमा है। अतः सिनेमा की मानवी जीवन में बड़ी एहमीयत है। हालांकि दर्शक होने के नाते उसे फिल्में बनाने का हक होता नहीं परंतु फिल्में बनानेवाला निर्माता भी एक इंसान होता है और उसका फिल्में बनाने का उद्देश्य भी इंसानों के सपनों की दुनिया को परदे पर साकार करना होता है। फिल्में बनाते समय दृष्टिकोण कितना भी व्यावसायिक हो, कलात्मक हो या वैयक्तिक हो वह दुनियाभर के दर्शकों के लिए फिल्में बनाते वक्त इस बात का खयाल रखता है कि अपनी फिल्म दर्शकों के सपनों को परदे पर हू-बहू उतारे। दर्शक, फिल्म समीक्षक, समाचार पत्र, विभिन्न जनसंचार के माध्यम, टी. वी. चॅनल्स आदि पर फिल्मों की समीक्षाएं की जाती है, जिससे उसकी खूबियां और कमियां पता चलती हैं। इन समीक्षाओं को सुन-पढ़कर फिल्म निर्माता अपनी नई फिल्मों में दर्शकों की मांग के अनुकूल परिवर्तन भी करता है।

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

फिल्मों का फिल्म लेखक से सिनेमा घरों में परदे तक का सफर बहुत लंबा और विभिन्न संस्कारों का है। इसके बनने और परदे पर उतरने की प्रक्रिया में बहुत सारे आयामों का योगदान होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मानक विशाल हिंदी शब्दकोश (हिंदी-हिंदी) - (सं.) डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज शास्त्री, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, परिवर्द्धित संस्करण, 2001.
2. विकिपिड़िया ई-स्रोत
3. सिनेमा के चार अध्याय - डॉ. टी. शशिधरन्, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014.
4. हिंदी सिनेमा : दुनिया से अलग दुनिया - (सं) गीताश्री, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, 2014.